पवित्र आत्मा की निन्दा
और
मृत्य के फल वाला पाप

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

मत्ती 12:24 परन्तु जब फरीसियों ने यह सुना तो कहा, ''यह मनुष्य दुष्टात्माओं को केवल उनके सरदार बालजबूल की सहायता से निकालता है।''

यीशु ने जो किया उसके विषय में फरीसियों ने यह कहा, कि यह यीशु ने दुष्ट आत्मा या शैतान के द्वारा किया है न कि पवित्र आत्मा के द्वारा।

मत्ती 12:28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

यीशु ने कहा कि यह परमेश्वर की आत्मा का काम है।
अतः वे परमेश्वर की आत्मा को शैतान कह रहे हैं

मत्ती 12:31–32 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, **पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी**। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्रआत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग और न आने वाले युग में क्षमा किया जाएगा।

यह कहने के द्वारा पाप किया गया कि पवित्र आत्मा के कार्य, शैतान के कार्य हैं।

- मरकुस 3:29–30 से तुलना करें

परन्तु जो कोई पवित्रात्मा के विरूद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा : वरन वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है। क्योंकि वे यह कहते थे, कि उस में अशुद्ध आत्मा है।।

- वे पवित्र आत्मा को शैतान कह रहे थे।

1. यीशु, पवित्र आत्मा के प्रति अपने तीव्र प्रेम को व्यक्त कर रहे हैं तथा उसे ऊंचा उठा रहे हैं।

2. हर एक जन जो विश्वास करता है– नया जन्म प्राप्त करता है – ''उसमें'' पवित्र आत्मा है तथा उसे आत्मिक समझ है। इस बात में संदेह है कि यह व्यक्ति जान बूझ कर और पूरे इरादे के साथ पवित्र आत्मा की बुराई और निन्दा कर रहे थे।

3. एक अविश्वासी जन यीशु की निन्दा (या बुराई) कर सकता है, जिसे क्षमा किया जा सकता है। परन्तु यह दुर्लभ है कि कोई अविश्वासी जो पवित्र आत्मा जानता हो और किसी उद्देश्य से उसकी बुराई करे।

4. अविश्वासी भी इन विषयों के बारे में बुरी बातें बोलते और ईश-निन्दा करते हैः (1) विश्वासियों, (2) यीशु (3) और परमेश्वर, परन्तु शायद ही कभी पवित्र आत्मा के विषय में।

उदाहरण : **पौलुस एक ईश-निन्दक था।** 1 तीमुथियुस 1:12-14
और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं; कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया। मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।

पौलुस ने शायद यीशु और विश्वासियों की निन्दा की परन्तु पवित्र आत्मा की नहीं। और यह स्पष्ट है कि उसे क्षमा कर दिया गया था।

यह बार्नस के नोटस् हैं :
मत्ती 12:31-32 और मरकुस 3:28-30 में यीशु पाप के उस भयानक स्वरुप को बता रहे हैं जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध है और जिस पाप के वे लोग दोषी थे। इस में यीशु पर वह आरोप सम्मिलित था कि वह भी शैतान के साथ उसके दल में मिले हैं, या यह आरोप कि उसके आश्चर्यकर्म परमेश्वर की ''आत्मा'' या ''सामर्थ '' के द्वारा नहीं बल्कि दुष्टात्माओं के राजकुमार की सहायता से करता है। यह पवित्र आत्मा के विरुद्ध बुरा बोलना या सीधा अपमान था – उस पवित्र आत्मा के विरुद्ध जिसके द्वारा यीशु आश्चर्यकर्म करते थे।

उस समय, इस पाप के द्वारा उसका यही अभिप्राय था, जो मरकुस 3:30 से स्पष्ट हो जाता है, ''क्योंकि वे यह कहते थे, कि उस में अशुद्ध आत्मा है। बाकी सारे पाप – सारे जो स्वयं उद्धारक के विरुद्ध भी बोले गए – क्षमा कर दिए जाएंगे। परन्तु यह पाप स्पष्टतः उस पवित्र जन के विरुद्ध था। इस आरोप का यह अर्थ था कि परमेश्वर की दया और सामर्थ का उच्चतम प्रदर्शन, शैतान का कार्य है। अतः यह माना जाता है कि यह दिमाग की सबसे गहरी नीचता है। जिस पाप के विषय में वह बोल रहा है वह स्पष्ट है। यह उस पर आरोप था कि वह यह सारे आश्चर्यकर्म शैतान की सहायता से कर रहा है, और इस तरह वे पवित्र आत्मा को अपमानित कर रहे थे।

आज के समय में यह निंधारित करना बहुत कठिन है किस व्यक्ति ने यह पाप किया है।

- यह पाप करने के लिए, क्या व्यक्ति को सीधा यीशु से बोलना चाहिए? यीशु से यह बोलने का अर्थ है कि उसके ईश्वरीयपन का इनकार करना जो वह है।

- किसी सच्चे विश्वासी के लिए या उसके बारे में यही बातें करना जो यीशु के नाम और पवित्र आत्मा के सामर्थ के द्वारा दूष्टात्माओं को निकाल रहा है, ''क्या उसका अपराध इस युग और आने वाले युग में क्षमा किया जाएगा? व्यक्तिगत तौर से मैं समझता हूं नहीं। वे इस बात का चाहे इनकार न कर रहे हों जो यीशु है, परन्तु वे यह इनकार कर रहे हैं वह विश्वासी परमेश्वर की अधीनता में और उसके द्वारा भेजा हुआ है। आज के वक्त में बहुत से सच्चे समर्पित विश्वासी हैं जो यह कहते हैं कि यह और अन्य वरदान और पवित्र आत्मा की सेविकाई शैतानी है। वे यीशु में विश्वास करते हैं परन्तु यह विश्वास नहीं करते कि ''पवित्र आत्मा के कुछ वरदान'' आज के लिए भी हैं।

- यह कहना कि यीशु ने जो कार्य और आश्चर्यकर्म किए वो शैतान की सामर्थ से किए, इस बात से इनकार करना है जो यीशु है तथा उसके ईश्वरीय रुप का भी इनकार करना है। इस दशा का जारी रखना – यीशु मसीह और जो वह है उसकी अस्वीकृति – शारीरिक मृत्यु के लिए है, बिना क्षमा के '' इस युग और आने वाले युग में''। वे पवित्र आत्मा की निन्दा करते हैं और उसे झूठा ठहराते हैं जो उन्हें सत्य का प्रकाशन दे रहा है।

मृत्यु के फल वाला पाप

1 यूहन्ना 5:16
यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो, तो विनती करे, और परमेश्वर, उसे उन के लिये, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है जिसका फल मृत्यु है; इस के विषय में मै विनती करने के लिये नहीं कहता।

यूहन्ना हमें यह कह रहा है :

1. पापों की क्षमा के संदर्भ में प्रार्थना का महत्व, ज़रुरत और अधिकार (याकूब 5:14–16)।

2. ''ऐसा पाप है जिसका फल मृत्यु है''। मैं यह नहीं कह रहा कि आप इस पाप की क्षमा लिए प्रार्थना करें क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होगा। आप प्रार्थना कर सकते हैं परन्तु इसका कोई फल नहीं होगा।

इस अनुच्छेद का प्रशन यह है:
''मृत्यु के फल'' वाले पाप से क्या अभिप्राय है?

मृत्यु फल वाला पाप

नए नियम में ''मृत्यु'' शब्द का तीन तरह से प्रयोग हुआ हैः

(1) शारीरिकः देह की मृत्यु

(2) आत्मिकः परमेश्वर से अलगाव, इफिसियों 2:1; यशायाह 59:2

(3) दूसरी या अनन्त मृत्युः प्रकाशितवाक्य 2:11; 20:6,14; 21:8

''मृत्यु के फल वाला पाप'' का प्रशन समझना कठिन है। बाइबल के विद्वानों ने इस को स्पष्ट रीति से समझने का बहुत प्रयास किया है। परन्तु इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है।

मृत्यु के फल वाला पाप, देह की शारीरिक मृत्यु नहीं है जो किसी बीमारी से हुई हो तथा जिसका कारण हो सकता है पाप हो (यूहन्ना 5:14)। यीशु ने चंगाई के लिए प्रार्थना की और यहां तक कि मुरदों को भी जिलाया (मत्ती 10:8) और हमें भी वही करने के लिए कहा।(लूका 10:9; याकूब 5:14)

मृत्यु के फल वाला पाप आत्मिक मृत्यु नहीं है – हमें उनके लिए प्रार्थना करनी है जो पाप में पड़े हैं और परमेश्वर से अलग हैं (इफिसियों 2:1) ताकि वे भी बचाए जा सकें (2 तीमुथियुस 2:25–26)

ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के फल वाला पाप सम्बन्ध रखता हैः

- ''दूसरी मृत्यु'' या ''अनन्त मृत्यु'' – पाप के सभी प्रकार और ईश–निन्दा क्षमा की जा सकती है – इस स्थिति में कि वे पश्चाताप और विश्वास करें। यदि वे अविश्वास के पाप में बने रहें – तो उन्हें क्षमा नहीं किया जाएगा।

अतः ''मृत्यु के फल वाला पाप'' वही है जो ''पवित्र आत्मा की निन्दा'' करने वाला पाप है – जो इस सत्य पर अविश्वास करना है जो यीशु है और इस कारण उसे अस्वीकार कर देना है। इस पाप की क्षमा नही है।

उस व्यक्ति के लिए जिसने कभी यीशु पर विश्वास नहीं किया और उसको अपने उद्धारकत्ता के रुप मे अस्वीकार कर दिया दूसरी मृत्यु या अनन्त मृत्यु है। यह सम्भव अर्थ हो सकता है।

- और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। प्रकाशितवाक्य 20:14

- पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती हैः यह दूसरी मृत्यु है।। प्रकाशितवाक्य 21:8

परन्तु फिर भी, हम यह कैसे जान सकते हैं कि वे अविश्वास में आगे भी जारी रहेंगे? और जब तक वे मर नहीं जाते हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि उन्हें सत्य का प्रकाशन दिया जाए, ताकि वे विश्वास करें और अनन्तकाल की मृत्यु न पाएं।

जिस प्रकार यूहन्ना कहता है : मैं इस पाप की क्षमा के लिए प्रार्थना करने के लिए नहीं कहता, क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं। और इसी कारण मैं तुमसे विनती करने को नहीं कहता। आप प्रार्थना कर सकते हैं परन्तु यदि वे पश्चाताप न करें तो कोई फायदा न होगा।

निम्नलिखित विचारों के उल्लेख चाहे स्पष्ट नहीं है पर मुझे अधिक सम्भावित लगते है :

(1) नए नियम में इस तरह के पाप का ज़िक्र आया है, पाप जिसकी कोई क्षमा नहीं है ''न तो इस युग में न आने वाले युग में''। (मत्ती 12:31–21 तथा मरकुस 3:29)।

ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पर ज़िक्र पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप का हो रहा है तथा यूहन्ना प्रार्थना करने के कर्त्तव्य और उसकी सामर्थ यह कहते हुए कर रहा है कि पाप चाहे किसी भी तरह के हो, चाहे गंभीर, यह हमारा फर्ज़ है कि हम प्रार्थना करें कि उस मनुष्य को क्षमा मिल जाए।

परन्तु स्पष्ट रीति से एक पाप है जिसकी क्षमा नहीं है – ''जिस पाप का फल मृत्यु है''; ऐसे बहुत से पाप है जो इस श्रेणी में नहीं आते , और उनके सम्बन्ध में विश्वास की प्रार्थना करने के लिए काफ़ी गुंजइश है।

अक्षम्य पाप को परिभाषित करना बहुत कठिन है और हमारे लिए किसी भी हालत में पूर्ण निश्चय के साथ यह निर्धारित करना कि इस मनुष्य ने यह पाप किया है असम्भव है।

परन्तु बहुत से पाप हैं जो मनुष्य करते हैं जिनके पापों की क्षमा, स्वतन्त्रता और चंगाई के लिए प्रार्थना करना उचित है। वह प्रार्थना करे, और परमेश्वर, उसे उन के लिये जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा।

यह मेरे लिए स्पष्ट नहीं है कि यहां दूसरा ''वह'' कौन है : वह जो प्रार्थना कर रहा है या फिर यीशु – वह उन्हें जीवन देगा। हो सकता है यह उस से सम्बन्ध रखता है जो प्रार्थना कर रहा है; इसका अर्थ है कि उसकी प्रार्थना के कारण दोषी व्यक्ति को जीवन प्राप्त होता है।

हमें अपने सह–पापियों के लिए प्रार्थना करने के लिए कितने तत्पर और विश्वासयोग्य रहना चाहिए ताकि हम उनके उद्धार के कारण हों। स्वर्ग में कितने आनन्द की बात होगी जब वे प्रार्थनाओं के उत्तर में बहुतों को नाश होने से बचता हुआ देखेंगे।

- याकूब 5:15–16और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। (16) इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

नबियों के समय में ऐसा बहुत सी बार हुआ जब लोगों के पाप इतने व्याप्त और गंभीर हो गए कि नबियों को उनके लिए प्रार्थना करने को मना किया गया।

- यिर्मयाह 14:11 अतः यहोवा ने मुझ से कहा, ''इस प्रजा की भलाई के लिए प्रार्थना मत कर''।

- यशायाह 15:1 फिर यहोवा ने मुझ से कहा, यदि मूसा और शमूएल भी मेरे साम्हने खड़े होते, तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता। इनको मेरे साम्हने से निकाल दो कि वे निकल जाएं!

इन मामलों में नबियों को परमेश्वर के द्वारा सीधा आदेश दिया गया कि वे लोगों के लिए प्रार्थना न करें। नए नियम में इस प्रकार का हमें कोई आदेश नहीं मिलता। एक बार फिर, हम किसी के विषय में निश्चित रीति से यह नहीं कह सकते कि इसने अक्षम्य पाप किया है, ऐसा कोई नहीं है जिसके लिए हम प्रार्थना न करें। बहुत से ऐसे भी हो सकते हैं जो पाप में बहुत आगे चले गए और उनके लिए उम्मीद बहुत कम, लगभग न की हो। हो सकता है उन्होंने धर्म , नैतिकता , सभ्यता की सीमाओंको तोड़ दिया हो; हो सकता है वे वासनालिप्त और अधर्मी हों; वे धर्म विरोधियों और ठट्ठा करने वालों की संगति में हों; वे सब्त को तुच्छ जानते हों; हो सकता है वे धर्म शास्त्री हों परन्तु अब उन्होंने सुसमाचार के विश्वास को अब पूर्णतः त्याग दिया हो, परन्तु फिर भी, हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम उनके लिए प्रार्थना करें।

> क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहिचानें।(26) और इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाए।।
> 2 तीमुथियुस 2:25–26

''परमेश्वर के द्वारा सब कुछ सम्भव है'' और उसने बहुत से कठोर अपराधियों को भी पुनःर्निर्मित किया है तथा यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि ऐसा कोई निम्न स्तर नहीं जिसके ऊपर वह जय न प्राप्त कर सके। हम मनश्शे, तरसुस के शाऊल, या अगस्टीन, बनियन, न्यूटन या ऐसे हज़ारों मामले देखें, जो अधर्म के सबसे घृणित रुप से पुनःस्थापित हुए। इसलिए हम अपनी प्रार्थना के उत्तर में किसी के मन परिवर्त्तन के लिए निराश न हों, जब तक कि वे भटके हुए इस परख और आशा के संसार रहते हैं। ऐसा कोई माता–पिता निराश न हो जिसका पुत्र उन्हें छोड़ गया हो; ऐसी कोई स्त्री निराश न हो जिसका पति उससे दूर चला गया हो। कितने ही खोए हुए पुत्रों ने वापस आ कर अपने बूढ़े माता पिता के हृदय खुशियों से भर दिए। कितने ही दूर हो गए पति सुधर गए और उन्होंने वापस आ कर अपनी जवानी की पत्नी को फिर से खुशियां दी तथा अपने दुखी परिवार को फिर से स्वर्ग बना दिया।''

(बार्नस के नोट्स)

हो सकता है यूहन्ना उस बात का ज़िक्र कर रहा हो जो उसने प्रेरितों के काम 5:1–5 में हनन्याह और सफीरा के साथ होते हुए देखा था।

> और हनन्याह नाम एक मनुष्य, और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची। और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उस की पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पावों के आगे रख दिया। परन्तु पतरस ने कहा; हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े ? जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी ? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी ? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी ? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला। ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए ; और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।

मुझे यकीन है कि इस बात का यूहन्ना और सारे शिष्यों पर गहरा असर पड़ा होगा जिसे उन्होंने भूला नहीं। यूहन्ना ने इस मृत्यु के फल वाले पाप का स्मरण रखा – (इससे हम शारीरिक मृत्यु का निष्कर्ष निकाल सकते हैं अनन्तता का नहीं) और यूहन्ना इस बात को जानता था इस स्थिति में क्षमा और जीवन दान के लिए प्रार्थना या विनती का कोई लाभ नहीं होगा।

मैं मानता हूं कि ''मृत्यु के फल वाला पाप'' विश्वासी की अचानक शारीरिक मृत्यु भी है – परमेश्वर इस पृथ्वी पर उसके जीवन को अचानक अन्त कर देता है और वापस घर बुला लेता है – कुछ गंभीर पाप के कारण – जिसके द्वारा परमेश्वर सब को उस पाप की गंभीरता के बारे में बताना चाहता है। 1 यूहन्ना 5:16 में यूहन्ना कहता है:

> ''मैं नहीं कहता कि वह इस बात के लिए निवेदन करे।''

मेरा मानना है कि यूहन्ना कहता है कि : इस पाप के लिए प्रार्थना करने की कोई ज़रुरत नही है क्योंकि यह क्षमा नहीं होंगे। परमेश्वर ने उन्हें अपने पास बुला लिया। इस पृथ्वी पर उन का समय पूरा हो गया था।

हनन्याह और सफीरा के साथ जो कुछ हुआ वो देखने के बाद यूहन्ना का तार्किक निष्कर्ष यही होगा और वह यह नहीं कह रहा कि हम प्रार्थना न करें पर यह कि प्रार्थना का कोई परिणाम नही होगा।

मृत्य के फल वाले पाप को परिभाषित करना बहुत कठिन है, और हमारे लिए किसी भी हालत में – पूर्ण निश्चय के साथ – यह निर्धारित करना कि इस मनुष्य ने यह पाप किया है – असम्भव है। परन्तु ऐसे बहुत से पाप हैं जो मनुष्य करते हैं और उनके पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करना उचित है। इसलिए मैं यह मानता हूं कि हम सब के लिए प्रार्थना कर सुरक्षित रह सकते हैं।

पुराने नियम में शारीरिक मृत्यु के फल वाले पापों का उदाहरण :

> गिनती 16:31–38 वह ये सब बातें कह ही चुका था, कि भूमि उन लोगों के पांव के नीचे फट गई; (32) और पृथ्वी ने अपना मुंह खोल दिया और उनका और उनका घरद्वार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया।(33) और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े; और पृथ्वी उनके ऊपर पुनः समतल हो गई। इस प्रकार वे मण्डली में से नाश हो गए। (34) और जितने इस्त्राएली उनके चारों ओर थे वे उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, कि कहीं पृथ्वी हम को भी निगल न ले! (35) तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला।।(36) तब यहोवा ने मूसा से कहा, (37) हारून याजक के पुत्र एलीआजार से कह, कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले; और आग के अंगारों को उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं।(38) जिन्हों ने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पत्तर पीट पीटकर बनाए जाएं जिस से कि वह वेदी के मढ़ने के काम आवे; क्योंकि उन्हों ने यहोवा के साम्हने रखा था; इस से वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इस्त्राएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।

शओल (शब्दानुक्रमणिका #7585): अधोलोक या मृतकों की दुनिया (मानो गुप्त भूमिगत स्थान)।

इस शब्द की एक दम सही या स्पष्ट समझ नहीं है कि यह किन किन बातों की ओर संकेत करना है या यह कहां है।

ये सब पहली बार की घटनाएं हैं, मतलबः परमेश्वर के लोगों के द्वारा इस विशेष प्रकार के पाप को पहली बार करना, जिस प्रकार हनन्याह और सफीरा।

जो कुछ भी उनके साथ हुआ वह हमें यह अंकित करता है कि परमेश्वर पाप को और उसकी गंभीरता को किस तरह से देखते हैं।

1 कुरिन्थियों 10:1–13 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए।(2) और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपितिस्मा लिया।(3) और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया।(4) और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे, जो उन के साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।

[सब परमेश्वर के लहू से छुड़ाए हुए लोग थे। उसके लोग]

(5) परन्तु परमेश्वर उन में के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।

- इफिसियों (5:10) के विश्वासियों कों पौलुस कहता है : ''यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है।

- कुलुस्सियों (1:10) के विश्वासियों को पौलुस कहता है : ''ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।''

हम सभी विश्वासी परमेश्वर को अपने कार्यों के द्वारा प्रसन्न या अप्रसन्न कर सकते हैं। इसलिए 1 कुरिन्थियों 10:5 में लिखा है ''परमेश्वर उन में के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ'', इसका यह अर्थ नहीं है कि उनको मिरास नहीं मिली या उन्हें नरक दण्ड मिला।

(6)ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरी, कि जैसे उन्हों ने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें।(7) और न तुम मूरत पूजनेवाले बनों; जैसे कि उन में से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।(8) और न हम व्यभिचार करें; जैसा उन में से कितनों ने कियाः एक दिन में तेईस हजार मर गये। (9) और न हम प्रभु को परखें; जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा नाश किए गए।(10) और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। (11) परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थीः और वे हमारी चितावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं।(12) इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़ें।

इन दिए गए उदाहरणों में जो कुछ परमेश्वर के लोगों के साथ हुआ, वो सब हमें दिए गए विशिष्ट उदाहरण हैं ताकि हम पाप के गंभीर परिणामों की ओर ध्यान लगाएं। केवल कुछ विशेष मामलों में, जैसे कि ऊपर दिये गए है, उन लोगों के लिए हमारी प्रार्थना से कोई सहायता या लाभ प्राप्त न होगा।